6

अपनी-अपनी बीमारी

पाठ-प्रवेश

हमारे देश में तथा समाज में अनेक विषमताएँ हैं। कुछ लोगों के पास असीमित धन है किंतु वे टैक्स का रोना रोते हैं, पर समाज में ज़रूरतमंदों को देना नहीं चाहते। बहुत-से लोगों के पास मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साधनों का अभाव है। कुछ दूसरों की बेईमानी से दुखी हैं। सबकी अपनी-अपनी मंज़िल है, जिसके पास जितना है, वह पर्याप्त नहीं है। उसे और चाहिए इसलिए दुखी है। वास्तव में जीवन संघर्षों से परिपूर्ण है।

अभ्यास

बात पाठ की

मुख से

इन प्रश्नों के उत्तर बताइए। Oral Sk

क. चंदा माँगने और देने वाले कैसे पहचाने जाते हैं?

ख. लेखक टैक्स की बीमारी के बारे में क्या सोचते हैं?

ग. लेखक को टैक्स की बीमारी क्यों अच्छी लगती है?

कलम से

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए। Writing Sk

क. लेखक जिससे चंदा माँगने गए, वह क्यों परेशान था?

.....

ख. टैक्स की बीमारी की क्या विशेषता है?

.....

ग. लेखक को टैक्स की बीमारी वाले लोगों से ईर्ष्या क्यों हो रही है?

.....

घ. लेखक के पास आने वाला आदमी दूसरों की बेईमानी से क्यों दुखी था?

.....

ङ. पुस्तक-विक्रेता लेखक को पुस्तकों के पैसे माँगने पर भी क्यों नहीं दे रहा था?

.....

पाठ-अभ्यास के उत्तर

बात पाठ की

मुख से

(क) चंदा माँगने और देने वाले शरीर की गंध से पहचाने जाते हैं।

(ख) लेखक सोचते हैं कि यह टैक्स की बीमारी कैसी होती है, जिससे उनके परिचित मर रहे हैं? जबकि वे देखने में पूरी तरह से स्वस्थ और प्रसन्न हैं।

(ग) लेखक को टैक्स की बीमारी इस लिए अच्छी लगती है, क्योंकि इससे बीमार तगड़ा हो जाता है।

कलम से

1. (क) लेखक जिससे चंदा माँगने गए, वह इसलिए परेशान था, क्योंकि वह टैक्सों के कारण मर रहा था।

(ख) टैक्स की बीमारी में मनुष्य पूरी तरह से स्वस्थ और प्रसन्न दिखता है, उसका शरीर तगड़ा हो जाता है, मगर वह मानसिक रूप से परेशान रहता है।

(ग) लेखक को टैक्स की बीमारी वाले लोगों से इसलिए ईर्ष्या हो रही थी, क्योंकि वह भी उस बीमारी से उन्हीं जैसा बीमार होना चाहता था, उन्हीं जैसा मरना चाहता था। मगर उसके साथ ऐसा नहीं हो रहा था।

(घ) लेखक के पास आने वाला आदमी दूसरों की बेईमानी से इसलिए दुखी था, क्योंकि वह अपनी आदर्शवादिता के कारण बेईमानी नहीं कर पाता था तथा दूसरों को ऐसा करता देखकर अंदर-ही-अंदर कुढ़ता रहता था। अन्यथा वह भी बेईमानी करके औरों की तरह सुखी हो जाता।

(ङ) पुस्तक-विक्रेता लेखक को पुस्तकों के पैसे माँगने पर भी इसलिए नहीं दे रहा था, क्योंकि वह उन्हें पैसे अभी नहीं देना चाहता था तथा इस बात को टालने के लिए हँसी-मजाक का सहारा ले रहा था।